National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.nationaljournals.com
ISSN: 2455-9040
Received: 21-11-2022, Accepted: 07-12-2022, Published: 24-12-2022
Volume 7, Issue 2, 2022, Page No. 47-49

भारत में सामाजिक और धार्मिक सुधार ही क्यों ? एक विवेचनात्मक अध्ययन

डॉ. अनुराग पांडेय
असिस्टेंट प्रोफेसर, दयाल सिंह महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

सारांश
भारत में सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन 19 वीं शताब्दी में प्रारम्भ होता है। मुख्य रूप से ये आंदोलन दो मुद्दों पर केंद्रित रहता है, पहला ष्महिला सुधार और महिलाओं के समान अधिकार एवं दूसरा जाति प्रथा का उन्मूलन और छुआछूत प्रथा का अंत। अतः मुख्यतः समाज और धर्म सुधार आंदोलन लैंगिक एवं धार्मिक भेदभाव को खत्म कर, समानता के आधार पर एक समतामूलक समाज की स्थापना पर जोर दे रहा था। यह अध्याय इस बिंदु पर प्रकाश डालता हैं के भारत में सामजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन हुए ही क्यों? क्यों भारत सिर्फ 1857 की एकमात्र क्रांति ही देखता है और भारतियों ने दुबारा 1857 की तर्ज पर गलतियों से सनक लेते हुए आखिर क्यों सशस्त्र विद्रोह या युद्ध नहीं किया? प्रस्तुत लेख इन्ही कुछ बिंदुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास है।

मूल शब्दः समाज सुधार आंदोलन, ब्रिटिश और भारत, लार्ड मैकॉले, चार्ल्स ट्रेविलियन, सती–प्रथा, क्रांति, संविधानवादी, अतिवादी, प्राच्यवाद, इंग्लिश शिक्षा प्रणाली

लार्ड मेकॉले कहते हैं के जिस तरह का भारतीय राज्य ब्रिटिशर्स बनाना चाहते हैं वो एक अनूठा राज्य होगा, ये बात मैकाले इसलिए कहते हैं क्योंकि ब्रिटिशर्स ने भारत जैसा राज्य ना तो कहीं ना देखा था ना ही सुना था और ना ही भारत जैसे किसी भी राज्य पर उनका किसी भी तरह का कोई अनुभव ही था। अतः जब ब्रिटिशर्स भारत को वैसा बना देंगे जैसा वो खुद चाहते हैं तब ये एक अनूठा राज्य कहलाएगा। मैकाले द्वारा अनूठा राज्य बनाने की बात कहने के पीछे का तर्क ये था के भारत पहले से ही एक राष्ट्र था, यहाँ मंदिर, मठ और घुमक्कड़ी प्रवृति ने भारतियों को एकजुटता में बांधा, उनका ये मानना था के एक ऐसा राज्य जो धार्मिक, भाषाई, सांस्कृतिक, जातीय इत्यादि आधारों पर विभिन्नताओं से परिपूर्ण है और जो सम्मान देने की भावना पर आधारित है उसका इतिहास गौरवपूर्ण है और ये राष्ट्र की भावना से औत प्रोत है। यहाँ कई तरह से विश्विद्यालय हैं जहाँ गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के तहत एक उच्चतम तर्क आधारिक ज्ञान दिया जाता है, जिसमें ना केवल मानसिक बल्कि शारीरिक और शास्त्र एवं शस्त्र की भी दीक्षा दी जाती है। मैकाले इसी शिक्षा व्यवस्था को ध्वस्त करना चाहते थे। लार्ड मैकाले का ये तर्क 1828 से 1835 तक कई ब्रिटिश गवर्नर जनरल के मस्तिक्ष में था और क्योंकि प्राच्यवादी शिक्षा प्रणाली ब्रिटैन में उस दौर में हावी थी तो कई पढ़े लिखे भारतीय भी इन्हीं विचारों से प्रेरित थे।

प्राच्यवाद ने विश्व को दो भागों में बांटा, पहला ओरिएंट और दूसरा ऑक्सीडेंट। ओरिएंट उन देशों को कहा गया जो पूर्व के देश थे, जहाँ तर्क का अभाव था, ऐसे देश दकियानूसी, धर्मांध, पिछड़े इत्यादि कहे गए, वहीं दूसरी ओर ऑक्सीडेंट यूरोपियन राज्यों को कहा गया जो ओरिएंट के ठीक विपरीत थे, जहाँ तार्किकता की प्रधनता थी, विकसित थे, आधुनिक विचारों का बोलबाला था इत्यादि।

इन्हीं विचारों से और मैकाले के सिद्धांतों से वारेन हेस्टिंग्स, लार्ड विलियम बेंटिंक, राजा राम मोहन रॉय इत्यादि प्रभावित थे। यहाँ ये प्रश्न उठता है के मैकाले कैसे अपनी योजना में सफल रहे। मैकाले सन 1834 से 1838 तक भारत में रहे और इन्हीं चार वर्षों में उनका संवाद चर्ल्स ट्रेविलियन से होता है, उस वार्ता का मुख्य प्रश्न था ष्ब्रिटिश भारत पर कितने वर्षों तक शासन कर सकते हैं? क्या वो तरिके होंगे जिससे ब्रिटिश लम्बे समय (लगभग 100 वर्षों) तक भारत पर राज करें?ष यहाँ चार्ल्स ट्रेविलियन मैकाले को जवाब देते हैं, वो कहते हैं के किसी समाज को समझने के लिए उस राज्य को समझना जरूरी है, और क्योंकि भारत एक विविधताओं वाला देश है, इस राज्य को समझना थोड़ा मुश्किल है। भारत में रूढ़िवादिता, धर्मांधता, जाति व्यवस्था, स्त्री–पुरुष सम्बन्ध इत्यादि गैर प्रजातांत्रिक और अनुदारवादी हैं, भारत का एक स्वर्णिम इतिहास रहा है, यहाँ हमारे देश जैसा सामंतवादी राज्य कभी अस्तित्व में नहीं था और ना ही राज्य कभी वंश प्रधान रहा है, इन मामलों में भारत का इतिहास ब्रिटेन के इतिहास से बिल्कुल अलग एवं अद्वितीय है। राज्य के नागरिक निरंकुश राजा या तंत्र को या अकर्मण्य राजा को कभी पसंद नहीं किए क्योंकि भारतियों का विश्वास ऐसे राजा में होता था जो प्रजा की भलाई, दयाभावना और सम्मान करता हो।

इसी कारण जब ब्रिटिश भारत आए और उन्होंने कई युद्धों को छल कपट से जीता तब भारतियों की निष्ठां अपने स्वदेशी राजा के प्रति और प्रगाढ़ हुई फलस्वरूप ब्रिटिश के विरुद्ध भारत में एक माहौल बना।

चार्ल्स ट्रेविलियन कहते हैं के भारतीय राज्य की इसी विशेषता को ब्रिटिश शासन को समझना पड़ेगा, अगर ब्रिटिश भारतियों को सम्मान नहीं देंगे, उनके आंतरिक मामलों में अत्यधिक और अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं करेंगे, उनके लिए कुछ आधुनिक नियम, कानून, संस्था और विचारों का निर्माण नहीं करेंगे तो भारतियों के मष्तिष्क में ब्रिटिश कभी भी एक शासक के रूप में स्थापित नहीं होंगे, हालाँकि ये सभी कार्य हालांकि ब्रिटिश को ज्यादा फायदा पहुंचाएंगे लेकिन भारतीय इसे भारत के विकास के रूप में देखेंगे। अगर ब्रिटिश शासन ऐसा करने में अक्षम होता है तब भारतीय ब्रिटिशर्स को सिर्फ आक्रांता, युद्धोन्मादी, क्रूर और अत्याचारी ही मानेंगे। क्योंकि युद्ध या शास्त्रों द्वारा प्राप्त और विजय और उसका स्वरुप

बड़ा ही अनिश्चित एवं संदिग्ध होती है। युद्ध द्वारा विजय लम्बे समय तक भारत जैसे राज्य में नहीं टिक सकती। अब प्रश्न खड़ा होता है के ब्रिटिश शासन के लिए भारतीयों पर असली जीत किसे कहा जाए? यहाँ चार्ल्स ट्रेविलियन मेकॉले को जवाब देते हैं के किसी भी युद्ध में असली जीत उसे माना जाता है जब हम युद्ध द्वारा मिली जीत को किनारे रखते हुए राज्य के निवासियों के दिल और दिमाग में एक सम्मानजनक स्थान बना पाते हैं। इसलिए ब्रिटिश शासन को इस बात पर जोर देना चाहिए के भारत में किस तरह हेगेमनी (वर्चस्व) बनायें ना की डोमिनेन्स (वर्चस्व)। हेगेमनी का सीधा अर्थ जहाँ व्यक्ति शासन को अपने पर शासन करने की वैधानिकता देता है और राज्य द्वारा किये हुए गलत कार्यों को समझ नहीं पाता वहीं दूसरी ओर डोमिनेन्स उग्रता लिए होता है और यहाँ व्यक्ति हमेशा शासन के विरुद्ध होता है क्योंकि वो शासन पर विश्वास विकसित नहीं कर पाता है और अगर ब्रिटिश शासन भारतियों के दिलों को जीतने में असफल होता है तो ब्रिटिश शासन भारत में अनिश्चित होगा और भारतीय हमेशा ब्रिटिश शासन के विरुद्ध लामबंद होंगे।

अब आगे मैकाले चार्ल्स ट्रेविलियन से पूछते हैं के कैसे हम ब्रिटिशर्स भारतियों के मध्य हेगेमनी स्थापित कर पाएंगे, कैसे ये साबित कर पाएंगे भारतीय असभ्य हैं, आधुनिकता विरोधी हैं और हम यहाँ भारतियों को सभ्य बनाने आए हैं क्योंकि हमने भारत को युद्ध के दम पर जीता है और भारतियों की नजरों में हम सिर्फ एक युद्धोन्मादी, कपटी और हिंसक हैं, ऐसी स्थिति में ब्रिटिश कैसे भारत पर लम्बे समय तक शासन कर पाएगा। इस प्रक्रिया को अगर अपनाया जाता है तो मुख्य रूप से दो तरह के व्यक्ति या संगठन से ब्रिटिश को सामना करना पड़ेगा एक वो जो क्रांति या विद्रोह के रास्ते पर चुनौती देंगे दूसरे वो जो संवैधानिक प्रक्रिया में सौदेबाजी की संस्कृति को विकसित करेंगें। इसके लिए भारत में कानून के शासन की व्यवस्था करनी होगी जिसकी मदद से हम उन लोगों की चुनौती ध्वस्त करेंगे जो क्रांति या विद्रोह के रास्ते पर होंगे और इसी कानून के शासन की वजह से उन संगठनों/व्यक्तियों से संवैधानिक सौदेबाजी कर पाएंगे। इस तरह से ही भारत में ब्रिटिश शासन 100 वर्ष या उससे ज्यादा रह सकता है।

मैकाले शिक्षा व्यवस्था और चार्ल्स ट्रेविलियनः संवाद से कार्यान्वयन तक

मैकाले के उपरोक्त प्रश्न का जवाब देते हुए चार्ल्स ट्रेविलियन कहते हैं के ब्रिटिश से भारत आजादी तो लेकर ही रहेगा, और भारतीय मुख्य रूप से दो रास्ते अपना सकते हैं, पहला रास्ता ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह या युद्ध, ये रास्ता भारतियों को तुरंत स्वाधीनता दिलाएगा, हो सकता है के ब्रिटिश कुछ युद्ध जीत जाएं या कुछ विद्रोह को दबा दें, लेकिन इस रस्ते पर अगर भारतीय चलें तो उन्हें स्वाधीनता कुछ ही वर्षों में मिल जाएगी। दूसरा रास्ता है ब्रिटिश भारत को समाज सुधार के रस्ते पर डाल दें, अगर भारतीय समाज सुधार की तरफ आकर्षित होते हैं तब अधिकांश व्यक्तियों का ध्यान विद्रोह या युद्ध से हट जाएगा और ब्रिटिश भारत में 100 वर्षों तक शासन कर पाएंगे। लेकिन इस रस्ते पर भी कोई ना व्यक्ति, समूह, संगठन खड़ा होगा जो स्वाधीनता की मांग करेंगे। कुल मिलाकर भारतीय उपरोक्त वर्णित दोनों रास्तों में से किसी भी एक पर चलकर ब्रिटिश शासन से एक ना एक दिन स्वाधीनता प्राप्त कर ही लेंगे। और अगर ब्रिटिश भारत में लम्बा शासन स्थापित करना चाहते हैं तो उन्हें कुछ ऐसे कदम उठाने होंगे जो सुधारवादी लगें। इसके लिए ब्रिटिश शासन को प्राच्यवादी ज्ञान की मदद लेनी होगी और इंग्लिश शिक्षा प्रणाली को आरम्भ करना पड़ेगा (इसे ही मैकाले शिक्षा प्रणाली कहा जाता है)। साथ ही साथ भारत के युवा वर्ग को इस इंग्लिश शिक्षा प्रणाली में ढालकर उसे ब्रिटिश शासन को वरदान मानने के लिए जतन करना पड़ेगा।

सन 1838 के आस पास मैकाले वापस ब्रिटैन चले जाते हैं और इस वार्ता को एक दस्तावेज के रूप में ब्रिटिश शासकों के लिए छोड़ जाते हैं, लेकिन इन बिंदुओं पर अमल नहीं होता और ब्रिटिश सन 1857 में भारतियों के रोष से उपजी क्रांति का सामना करता है। हालाँकि ब्रिटिशर्स इस क्रांति को दबा देते हैं लेकिन ब्रिटिश संसद में सन 1861 में इस मुद्दे पर बहस छिड़ जाती है के भारतियों ने ये आंदोलन क्यों किया? मुख्य रूप से दो दल उस समय ब्रिटिश संसद में वर्चस्व रखते थे एक कंजर्वेटिव दूसरा लिबरल। कंजर्वेटिव ये मानते थे के ब्रिटिश शासन ने भारतियों को दबा के नीचा दिखा के और पूर्ण दमन करके नहीं रखा जिस वजह से उनमें हिम्मत आई और वो श्महान ब्रिटिशश के खिलाफ उठ खड़े हुए, अबसे ब्रिटिश शासन को अत्यंत कुरतापूर्ण दमन का रास्ता अपनाना होगा ताकि भारतीय ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आवाज उठाने के बारे में सोच ही ना पाएं। वहीं दूसरी ओर लिबरल्स जिनमें चार्ल्स ट्रेविलियन और मैकाले प्रमुख थे वो इन बातों का विरोध करते हुए कहते हैं के हमने भारतियों के साथ ऐसा ही किया जिस वजह से ये क्रांति हुई और अगर ये दमनचक्र जारी रहा तो भविष्य में कई और क्रांतियां होंगी, जिससे ब्रिटिश शासन एक ना एक दिन भारत में बिखर जाएगा। भारत में ब्रिटिश व्यवस्था को आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है, जिसमें भारतियों को सम्मान, स्वतंत्रता, समानता, न्याय, अधिकार,इत्यादि देने होंगे, साथ में भारतियों का सहयोग लेना पड़ेगा ताकि वो ब्रिटिश शासन पर विश्वास करें और इसके लिए उन्हें आधुनिकता से दूर रखने के बजाए, इंग्लिश शिक्षा प्रणाली में ढालना पड़ेगा और समाज सुधार का रास्ता दिखाना पड़ेगा। भारत में पहले से ही इंग्लिश शिक्षा प्राप्त व्यक्ति और संगठन हैं जो भारत को एक आधुनिक राष्ट्र बनते देखना चाहते हैं, अगर ब्रिटिशर्स इस रस्ते पर चलें तो शासन की राह आसान होगी। संसद की इस बैठक में मैकाले और चार्ल्स ट्रेविलियन के विचारों को प्रधानता दी गई और कंज़र्वेटिव दल के विचारों को नकार दिया गया।

इसी क्रम में सन 1861 का इंडियन कॉउन्सिल एक्ट आता है, जिसमें कई अन्य बातों के अलावा भारतियों को विभिन्न मुद्दों पर सहमति और विमर्श के लिए स्थान देता है। इसके पश्चात ब्रिटिश शासन ने भारत में इंग्लिश शिक्षा प्रणाली विकसित करने के उद्देश्य से कई विश्वविद्यालय, कॉलेज, विभिन्न शैक्षणिक संस्थाएं खोलीं। जहाँ शुरू के दौर में ब्रिटिशर्स अहस्तक्षेप की नीति पर चले, (क्योंकि उन्हें भारतीय राज्य का पूर्ण ज्ञान नहीं था और ना ही उसकी विविधता का) लेकिन साथ ही साथ कुछ विदित सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए कानून लाए जैसे सती–प्रथा उन्मूलन इत्यादि। वहीं 1861 के बाद ब्रिटिश शासन ने प्राच्यवाद आधारित इंग्लिश शिक्षा प्रणाली को तीव्र गति से लागू किया और भारतियों को इस शिक्षा प्रणाली के तहत ये जताने का प्रयास के भारत एक दकियानूसी, धर्मांध,परम्परावादी और आधुनिकता विरोधी समाज है और ब्रिटिश शासन भारतियों को इन कुरीतियों से दूर करके एक आधुनिक राष्ट्र का निर्माण करने में मदद करेगा। इस तरह भारतीय समाज में प्राच्यवादी विचारों को घोला गया और भारतिय समाज में व्याप्त कई कुरूतियों को खत्म करने का प्रयास किया और कानून लाए। इससे पढ़े लिखे भारतियों के मध्य हीन भावना विकसित हुई और भारतीय शिक्षित मध्य

वर्ग का एक बड़ा समूह इस प्राच्यवादी शिक्षा के कारण भारत को एक पिछड़ा, दकियानूसी, धर्मांध, तर्कहीन राज्य एवं समाज मानने लगा जिसे सामाजिक और धार्मिक सुधारों की आवश्यकता है। इनके मध्य ये उम्मीद प्रबल हुई के ब्रिटिश भारत को एक आधुनिक राज्य बनाएंगे।

ये सब कार्य भारत के गौरवशाली इतिहास को दमन करने के लिए किया गया एक प्रयास था। इसे मैकाले शिक्षा प्रणाली कहा गया जो प्राच्यवाद से प्रेरित थी और जो भारतियों को हीनभावना का एहसास कराती थी। जब शिक्षित वर्ग का एक बड़ा समूह ब्रिटिश में विश्वास करने लगा तब ब्रिटिशर्स ने भारत में कानून का शासन स्थापित किया और कहा के भारत में अब सभी व्यक्तियों को समानता, स्वतंत्रता, अधिकार, न्याय इत्यादि सुलभ कराए। इन प्रावधानों ने भारतीय मध्य वर्ग के अंदर ब्रिटिशर्स के प्रति विश्वास का भाव पैदा किया क्योंकि कानून का ये शासन भेदभाव उन्मूलन की वकालत करता था और प्रजातांत्रिक मूल्यों की वकालत करता था। यहीं से भारतीय क्रांति, विद्रोह इत्यादि के रास्ते से हटकर समाज सुधार के रास्ते पर चलना शुरू किए। यहीं से जाति प्रथा उन्मूलन, लैंगिक समानता, धर्मी आधारित रूढ़िवादिता, स्त्री शिक्षा, इत्यादि कई समाज सुधार आंदोलन हुए। चार्ल्स ट्रेविलियन और मैकाले ने सफलतापूर्वक भारत को यूरोपियन मॉडल का रास्ता दिखाकर क्रांति और विद्रोह के जरिए प्राप्त हो सकने वाली आजादी से दूर किया और समाज सुधार का रास्ता दिखाकर स्वाधीनता आंदोलन को नई दिशा में मोड़ा जिससे स्वतंत्रता तो मिली लेकिन कई वर्षों के संघर्ष के बाद। आधुनिक राज्य बनने के सपने ने भर्तियों को तुरंत मिल सकने वाली स्वाधीनता से दूर कर दिया।

संदर्भ सूची

1. "Sir George Otto Trevelyan, 2nd Baronet", *Britanicca.* Accessed Via: https://www.britannica.com/biography/Sir-George-Otto-Trevelyan-2nd-Baronet#ref202351. Dated. 10/09/2019.
2. "The Late Lord Macaulay.; PERSONAL RECOLLECTIONS OF THE HISTORIAN", (Correspondence of Manchester Guardian). *The New York Times* (January. 27. 1860). Accessed Via: https://www.nytimes.com/1860/01/27/archives/the-late-lord-macaulay-personal-recollections-of-the-historian.html. Dated. 12/12/2019.
3. Hillike JF, "Charles Edward Trevelyan as an Educational Reformer in India 1827-1838", Canadian Journal of History,1974:9(3)(Winter):275-292. Accessed Via: https://www.utpjournals.press/doi/abs/10.3138/cjh.9.3.275?journalCode=cjh. Dated. 24/06/2020.
4. Trevelyan, Laura. "History is Relative", (September.2), 2006. Accessed Via: https://www.spectator.co.uk/article/history-is-relative/. Dated. 12/01/2021.
5. McRae, Malcolm, Charles Trevelyan. "Sir Charles Trevelyan's Indian Letters, 1859-1865", The English Historical Review,1962:77(305):706-712. Accessed Via: https://www.jstor.org/stable/559670. Dated. 25/06/2020.
6. Orientalist-Anglicism Controversy. Accessed Via: https://www.insightsonindia.com/modern-indian-history/social-policies/education-policies/orientalist-anglicism-controversy/. Dated. 27/12/2020.
7. Trevelyan, Charles Edward. On the Education of the People of India. (Longman, Orme, Brown, Green, & Longmans), 1838.